पुरुषोत्तम संगमयुग और परमात्म-शक्ति की अनुभूति से सेवा

संगमयुग के वर्तमान वर्ष में ईश्वरीय सेवा अर्थ विषय चुना गया है – 'परमात्म-शक्ति की अनुभूति सबको कराना।' वर्तमान समय सभी अनुभूति चाहते हैं क्योंकि अनुभव से आगे बढ़ना और आने वाली समस्याओं का सामना करना सहज हो जाता है।

हमने कई पाठकों से अनुभव माँगे थे कि उन्होंने कैसे परमात्मा की दिव्य शक्ति अनुभव की है, बहुत ही अच्छे अनुभव प्राप्त हो रहे हैं।

सबके अनुभव में मुख्य यही बात आती है कि उन्होंने जीवन में जो परिवर्तन पाया है उसका मुख्य आधार परमात्म-साक्षात्कार की शक्ति है। साक्षात्कार के आधार पर जो अनुभव हुआ उससे परमात्मा के प्रति श्रद्धा दृढ़ हो गई। बुराइयों पर विजय पाना सहज हो गया और संस्कार परिवर्तन भी सहज रूप से कर रहे हैं। साक्षात्कार बहुत बड़ी दिव्य शक्ति है। श्रीमद्भगवद्गीता में ग्यारहवें अध्याय में, जिसका नाम 'विश्व रूप दर्शन' है, श्रीकृष्ण ने अर्जुन को परमात्मा की दिव्यता और महानता का साक्षात्कार युद्ध भूमि के बीच में कराया। इस ईश्वरीय ज्ञान का प्रथम चरण भी साक्षात्कार ही है, उसी के आधार पर परमात्मा की दिव्य शक्ति की अनुभूति पिताश्री ब्रह्मा बाबा को हुई। उन्होंने पहले विनाश का और फिर आने वाली नई दैवी सृष्टि का साक्षात्कार किया, फलस्वरूप प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के जीवन में परिवर्तन हुआ। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने साक्षात्कार का अनुभव हमको डायरेक्ट सुनाया। जब अनुभव सुना रहे थे तब उनके मुख की तेजस्विता, धैर्य और भव्यता देखने लायक थी कि साक्षात्कार की अनुभूति जीवन को कैसे श्रेष्ठ बनाती है।

आज की दुनिया में कई लोग बुद्धि प्रधान हैं। उन्हें बुद्धि को जंचने योग्य अनुभूति चाहिए। जब तक बुद्धिगम्य प्रमाण नहीं मिलता, तब तक वे समझते हैं कि साक्षात्कार भी एक प्रकार की माया है। परिणामस्वरूप कई बार सत्य को असत्य मान लिया जाता है।

इस वर्ष 'परमात्मा की दिव्य शक्ति की अनुभूति' यह विषय इसलिए रखा है ताकि इससे सबको परमात्मा का परिचय मिले, श्रद्धा बढ़े और वे अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का पुरुषार्थ करें। हम चाहते हैं कि इस वर्ष ऐसी ईश्वरीय सेवा हो कि दुनिया में कोई भी नास्तिक न रह जाये। सबके दिल में प्रभु प्रेम की दिव्य गाथा की जयजयकार हो जाए।

सब मानते तो हैं कि कोई दिव्य शक्ति है और सृष्टि संचालन के पीछे उसका हाथ और साथ है किन्तु परमात्मा की उस दिव्य शक्ति की अनुभूति कैसे करें, यह मालूम नहीं है। इसलिए हमें ईश्वरीय सेवा अर्थ सबको परमात्मा का परिचय देना है।

सबसे सहज परिचय यह देना है कि परमात्मा के साथ हमारा सम्बन्ध क्या है? सम्बन्ध के आधार पर ही आगे का कर्त्तव्य होता है। परमात्मा के साथ सब प्रकार के सम्बन्ध स्थापित करना सहज है। जैसे गेहूँ वही है, उसी से कोई लड्डू बनाकर खाता है तो कोई पँराठा भी बनाता है। जैसे जिसकी इच्छा होती है, उसी प्रकार से चीज़ें बनाता है और भूख को संतुष्ट करता है। वहाँ भूख की बात आती है, यहाँ पर भावना की बात आती है। हरेक मनुष्य की अपनी-अपनी भावनाएँ होती हैं, उन्हीं के आधार पर उनके हृदय में परमात्मा के प्रति सम्बन्ध स्थापित करना होता है। इसीलिए गायन भी है कि परमात्मा माता भी है, तो पिता भी है, बंधु भी है, तो सखा भी है। परमात्मा से ही पैसे की प्राप्ति होती है तो विद्या रूपी धन की भी। सर्व प्रकार के सम्बन्धों की संतुष्टता परमात्मा से ही होती है। इसलिए परमात्मा के साथ सम्बन्ध के रूप में, भक्तिमार्ग में अनेक रूप प्रचलित हैं। उसी कारण तीर्थयात्राएँ भी करते हैं। जैसे उत्तर हिन्दुस्तान में अमरनाथ की यात्रा करते हैं, वहाँ बर्फ के लिंग से बनी हुई प्रतिमा के दर्शन कर धन्य होते हैं। कहीं वैष्णोदेवी के दर्शन कर संतुष्ट होते हैं। कई हनुमान तो कई कालकादेवी के मंदिर में जाते हैं। जैसी जिसकी भावना होती है, परमात्मा उसी रूप से पूर्ण करते हैं।

पिताश्री ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद एक अव्यक्त संदेश आया था कि जब अव्यक्त रूप में जा रहे थे तो अचानक ही शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा को कहा – तुम दो मिनट रुको, मैं अभी आता हूँ और फिर थोड़े समय में शिव बाबा वापस आए तो ब्रह्मा बाबा ने पूछा, आप कहाँ गए थे? शिव बाबा ने कहा, एक भक्त की तीव्र इच्छा थी कि उसके इष्ट देव की प्रतिमा से साक्षात्कार हो, तो मैं उसे साक्षात्कार कराने गया था। तब ब्रह्मा बाबा ने कहा, आपने क्यों कष्ट किया, मुझे कहते, मैं साक्षात्कार करा कर आता। तब शिव बाबा ने कहा, नहीं, यह साक्षात्कार कराने की शक्ति सिर्फ मेरे पास ही है, मैं ही करा सकता हूँ और भक्त की भावना को पूर्ण कर सकता हूँ। आप आदि देव हैं, परन्तु देव होते हुए भी मनुष्यत्व का बंधन है और मैं जन्म-मरण से रहित हूँ इसलिए मैं सदाकाल मुक्त हूँ। इस प्रकार से परमात्मा ने अपनी दिव्य शक्ति का अनुभव ब्रह्मा बाबा को कराया। इससे पता पड़ता है कि परमात्मा के साथ कैसे अनेक प्रकार के सम्बन्ध जोड़ सकते हैं। विभिन्न धर्मों में परमात्मा को पिता के रूप में माना गया। परमात्मा, पिता के रूप में पालना देते हैं परन्तु कई बार, कई आत्माओं को विशेष स्नेह की आवश्यकता होती है जिसका अनुभव मातृ-शक्ति के द्वारा ही हो सकता है। इसलिए माता के रूप में या देवी के रूप में प्रभु को याद करते हैं। संन्यास धर्म में माताओं के बारे में अनेक गलत बातें लिखी हुई हैं ताकि सबके मन में संन्यास की भावना उत्पन्न हो, फिर भी आदि शंकराचार्य ने देवी स्तोत्र लिखकर देवी रूप से मातृ-वंदना कर, प्रभु शक्ति की महिमा गाई और यह देवी स्तोत्र संस्कृत साहित्य में एक बहुत ही सुन्दर पद्य रचना है, ऐसा सब विद्वान मानते हैं। परमात्मा से माता के रूप में हमको जो पालना मिलती है उसकी अनुभूति को हम लिख सकते हैं।

परमात्मा के परिवार के हम सदस्य हैं इसलिए परमात्मा हमारा बंधु है। लौकिक जगत में जिस प्रकार राम-लक्ष्मण के मध्य बंधु-प्रेम की कहानी विश्व प्रसिद्ध है इसी प्रकार से भाई-भाई के नाते से परमात्मा के द्वारा हम अपने जीवन

को श्रेष्ठ बनाने का अनुभव लिख सकते हैं और इससे ईश्वरीय सेवा हो सकती है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी-अपनी विचारधारा और पसंद भी है। शास्त्रों में, भगवान के साथ, अर्जुन का सखा प्रेम प्रसिद्ध है। इसका अर्थ है कि परमात्मा को सदा हम अपने साथ रखते हैं, कभी अपने को अकेला नहीं समझते। परमात्मा का वरदान है कि जो मुझे साथ रखता है मैं उसकी सदा रक्षा करता हूँ। जिन्होंने परमात्मा का साथ निभाया है उनके प्रति परमात्मा सदा ही अनेक प्रकार की मुसीबतों में मददगार रहे हैं। एक बार अलग-अलग दुर्घटनाओं में दो व्यक्ति दुर्घटनाग्रस्त हो गए। एक की रक्षा हुई। मैंने शिव बाबा से पूछा, एक ही प्रकार की दुर्घटनाओं में एक की रक्षा हुई, दूसरे की नहीं, उसका कारण क्या है? तब शिव बाबा ने बताया, 'उस व्यक्ति ने दुर्घटना के समय बाबा कहकर मुझे याद किया, मुझे अपना साथी बना लिया, उस कारण उसको मदद मिल गई। परमात्मा को साथी बनाना और उसका साथ रखना, बहुत लम्बे समय के पुरुषार्थ का फल है। मुसीबत के समय पर मेरी याद आना इतना सहज नहीं है। परमात्मा को याद करने का स्वभाव-संस्कार बनाना पड़ता है तब ही ऐसे समय पर परमात्मा की याद आती है, ऐसे समय पर योग की ज़रूरत है। योगी सदैव याद द्वारा मुझे अपने साथ देखते हैं।' आज की भौतिक दुनिया में यह प्रश्न है कि धन से भगवान मिलता है या भगवान से धन मिलता है? कई तो धन को ही भगवान समझ कर धन की प्राप्ति को ही प्रभु-प्राप्ति समझ लेते हैं परन्तु श्रेष्ठ-में-श्रेष्ठ धन है परमात्मा। इसी धन की प्राप्ति के लिए मीरा ने राज्यभाग्य त्याग दिया। शास्त्रों में ऐसे त्याग करने वालों का बहुत गायन है। गौतम बुद्ध, महावीर आदि सबने अपने राज्य का त्याग करके ही प्रभु प्रेम और शक्ति की महिमा विश्व में प्रसिद्ध की और अपने धर्मों की स्थापना की। मूसा के द्वारा यहूदी धर्म की स्थापना हुई, वह भी राजकुमार था। इन सबने राजा के धर्म से भी बढ़कर प्रभु शक्ति की उपासना की और इस आधार पर अपना नाम विश्व इतिहास में अमर कर दिया। इस प्रकार के उदाहरण देकर हम परमात्मा की शक्ति को सच्चा धर्म मानकर, उसके आधार पर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का मार्ग-दर्शन दे सकते हैं।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ ज्ञान अध्यात्म ज्ञान है जिसके द्वारा हमें मैं कौन हूँ, यह सत्य परिचय मिलता है। रचना और रचयिता का द्वैत समझ में आता है। इससे हम यथार्थ पुरुषार्थ कर सकते हैं। आज की दुनिया में ज्ञान का विस्तार बहुत है परन्तु लोग विस्तार से सार में नहीं जाते अर्थात् सिंधु को बिंदु रूप में परिवर्तन नहीं कर पाते, परिणाम-स्वरूप, ज्ञान के विस्तार रूपी जंगल में फँस जाते हैं परन्तु सच्चा ज्ञान मिल जाए तो शेष सारे झंझटों से हम मुक्त हो जाते हैं। अत: परमात्म-ज्ञान सबको मिले, ऐसा पुरुषार्थ हमें करना है।

इस लेख द्वारा हमने परमात्मा के साथ दिव्य अनुभूति से ईश्वरीय सेवा कैसे हो सकती है, उसे सार रूप में लिखने का पुरुषार्थ किया है। विस्तार रूप में, शिक्षक बहन-भाई अपने विचार और अनुभव सबके सामने रखेंगे। अगले लेख में हम परमात्मा की शक्ति, कर्त्तव्य तथा गुणों की महिमा के द्वारा कैसे ईश्वरीय सेवा हो सकती है, इसके बारे में चिंतन करेंगे। ❑❑

सदा सुखी, संतुष्ट, निर्भय तथा अडोल बनने के लिए मनुष्य को 'सरलता' अवश्य धारण करनी चाहिए और छल-कपट तथा दोष-दृष्टि को त्याग कर मन-वचन-कर्म से एक होना चाहिए।